International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.10 No.2 Nov – Dec 2022

कैमूर जिला के दुर्गावती प्रखण्ड का ग्रामीण विकास की सामाजिक-आर्थिक सुविधाएँ

राजेश यादव[1] प्रो० केशव प्रसाद यादव[2]
[1]शोधकर्ता असिस्टेंट प्रोफेसर भूगोल विभाग गांधी स्मारक त्रिवेणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बरदह, आजमगढ़,(उत्तर प्रदेश)
[2]शोधनिर्देशक भूतपूर्व विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग वीर कुँवर विश्वविद्यालय, आरा
***Corresponding Author-* राजेश यादव**
Email: psalld831@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7476689

प्रस्तावना: किसी भी क्षेत्र के ग्रामीण विकास में समेकित ग्रमीण विकास प्रक्रिया को तेज गति देने हेतु सामाजिक एवं आर्थिक सेवाओं की नियोजन एक प्राथमिक आवश्यकता है। ह्वाइट महोदय के अनुसार "मानव द्वारा प्राकृतिक एवं जैविक संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग हेतु अपनी ऐतिहासिक परम्पराओं के अनुरूप सदियों से विकसित अधिवास एवं भूमि उपयोग प्रारूप अधिवासों की पदानुक्रमिक व्यवस्था तथा उसके अनुरूप सेवाओं एवं सुविधाओं का वितरण इत्यादि का अध्ययन करता है तथा ग्राम्य जीवन में कई तरह के दशाओं में सुधार करता है जो सामाजिक परिवेश से जुड़े होते हैं। समेकित ग्राम्य विकास के अन्तर्गत समुदायिक विकास एक गत्यात्मक प्रक्रिया है जो परिवर्त्तित दशाओं में मानव कल्याण की पूर्ति हेतु क्रम जारी रहता है। साथ ही साथ विकास योजनाओं का उद्देश्य उन्नति एवं आत्म निर्भरता तक पहुंचाना है। इससे ग्राम्य अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। हालाँकि वास्तव में ग्राम्य विकास योजनाएँ ग्रामीण जन समुदाय की आर्थिक एवं सांस्कृतिक उन्नति पर भी निर्भर करता है। इसी सन्दर्भ में अल्वर्ट वाटर स्टोन ने ग्रामीण विकास को एक सामाजिक बहुदेशीय प्रक्रिया बतलाया है जिसमें कृषि विकास के साथ जनसाधारण हेतु विभिन्न सामाजिक सुविधाये भी सम्मिलित रहती है। एल०के० सेन के विचारानुसार सामान्यतः समन्वित ग्रामीण विकास में क्षेत्र विशेष के सामाजिक आर्थिक क्रियाओं के समुचित वितरण एवं अवस्थिति पर बल दिया जाता है जिससे प्रक्रिया में आर्थिक उन्नति उत्थान के साथ ही संस्थागत परिवर्तन भी अपेक्षित होता है।

मुख्य शब्द: ग्राम्य विकास, भूमि उपयोग, समेकित विकास अध्ययन क्षेत्र

दुर्गावती प्रखण्ड ¼Durgawati Block½ जिसे दुगौती (Durgauti) और दुर्गाती (Durgati) के नाम से भी जाना जाता है। यह प्रखण्ड भारत के बिहार राज्य के कैमूर जिले में दक्षिण बिहार मैदान के पश्चिमी भाग में स्थित है। इस प्रखण्ड का भौगोलिक विस्तार 25^0-12'-25'' उत्तरी अक्षांक्ष से 25^0-207^0N उत्तरी अक्षांक्ष तक तथा 83^0-32'2^0'E पूर्वी देशान्तर से 83^0-539E पूर्वी देशान्तर के बीच विस्तुत है। इस प्रखण्ड का समुद्र तल से औसत उच्चाई 76 M है तथा प्रखण्ड के उत्तर एवं पश्चिम दिशा में कर्मनाशा नदी पार चन्दौली जनपद (उ॰प्र॰), दक्षिण दिशा में चांद प्रखण्ड, चैनपुर प्रखण्ड एवं भभुआ प्रखण्ड है जबकि पूर्व दिशा में रामगढ़ प्रखण्ड एवं मोहनियाँ प्रखण्ड अध्ययन क्षेत्र का सीमा को निर्धारण करते हैं।

यह प्रखण्ड दुर्गावती नदी के किनारे बसा है। प्रखण्ड मुख्यालय से 3 कि.मी. की दुरी पर रेलवे स्टेशन है जो गया-मुगलसराय रेलवे खण्ड के अन्तर्गत आता है। यहाँ पूर्वी रेलवे (E.R.) तथा ग्रांड ट्रंक रोड (NH 2) दोनों एक दूसरे के समान्तर गुजरती हुई प्रखण्ड को लगभग दो बराबर भागों में बाँटती है।

दुर्गावमी प्रखण्ड का कुल क्षेत्रफल 16763.7 हेक्टेयर (158.69 कि.मी.^{2}) तथा कुल जनसंख्या जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार 136962 है। इस प्रखण्ड के अन्तर्गत एक प्रखण्ड मुख्यालय दुर्गावती तथा कुल 13 पंचायत (अवहिया, चेहरियाँ, छाँव, धरहरा, डुमरी, जेवरी, कल्याणपुर, कर्णपुरा, खजुरा, खामीदौरा, खडसरा, मसौदा एवं सावड़) है जिसके अन्तर्गत 108 गाँव जिसमें 90 गाँव चिरागी एवं 18 गाँव बेचिरागी है जो मानचित्र सं. 2.41 एवं तालिका 2.1 2021 से स्पष्ट है।

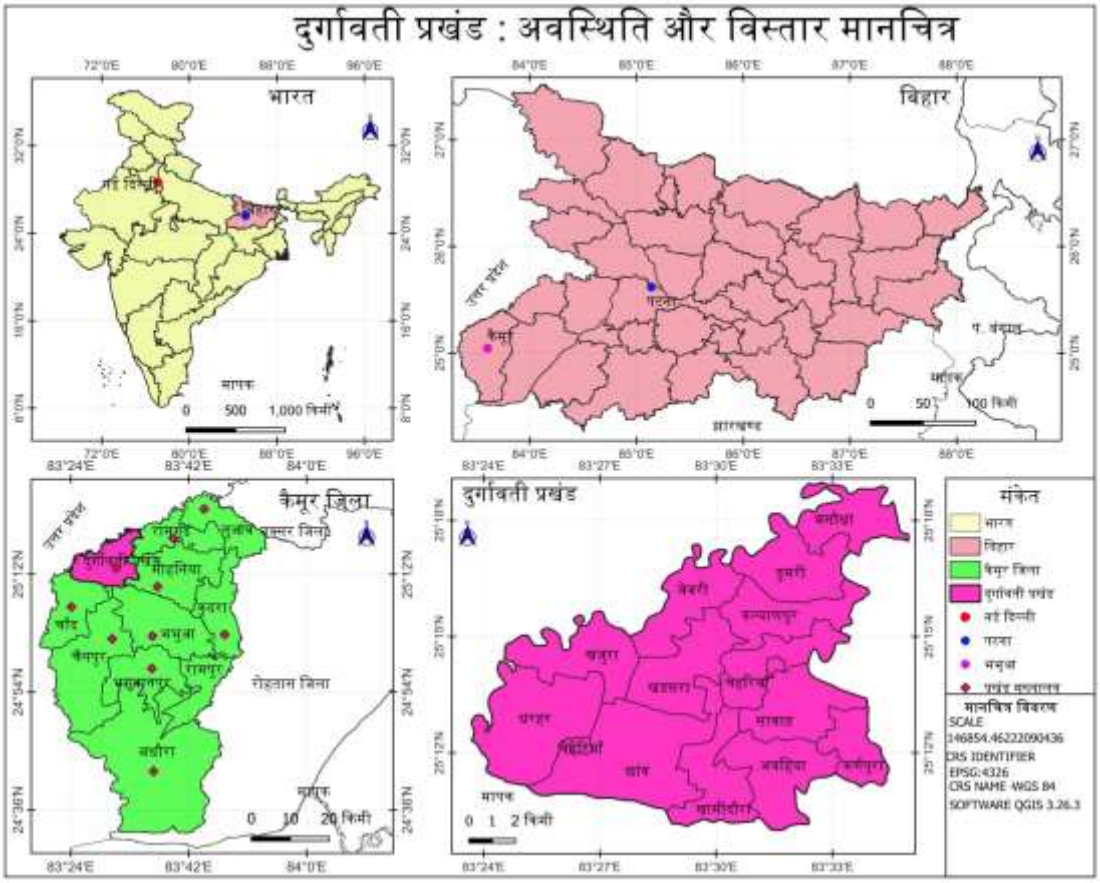

विधि तंत्र

वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ग्राम्य विकास करना है। यह योजना जनपद में राज्य एवं केन्द्र सरकार के प्रकाशित एवं अप्रकाशित सूचनाओ तथा सांख्यिकीय आंकड़े मुख्य सूचना स्रोत होंगे समुचित आंकड़े एकत्रित करने के लिये सर्वेक्षण आपेक्षित है। यह आंकड़े सामान्यता दो रूप में मिलते है।प्रस्तुत शोध पत्र में शोध विधि के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। इन आंकड़ों का विश्लेषण शोधार्थी ने एम एस एक्सल एप्लीकेशन पर किया है। जिनका विश्लेषण पुनः सारणी एवं आरेख के माध्यम से शोधार्थी ने प्रस्तुत किया है। शोध पत्र में अध्ययन क्षेत्र की आवश्यकता मानचित्र को आरकेजी आईएएस एप्लीकेशन पर शोधार्थी द्वारा तैयार किया गया है।

उद्देश्य

शोधकार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर पूर्ण करने का प्रयास किया जायेगा।

1. कृषि भूमि उपयोग का अध्ययन करना।

2. कृषि क्षेत्र मंे प्राविधियों के उपयोग का विश्लेषण करना।

सामाजिक आर्थिक अवस्थापनात्मक तत्वों, सेवाओं एवं सुविधाओं को ग्रामीण क्षेत्र में यथेष्ट रूप में विकेन्द्रित करके अर्थ तंत्र के विकास एवं सांस्कृतिक उन्नयन हेतु एक निश्चित दिशा प्रदान की जा सकती है। विकेन्द्रीत सेवाओं की उपलब्धि एवं उसका नियोजन निश्चित रूप से ग्राम्य अधिवास के आकार एवं पदानुक्रम एवं विकास क्षमता को ध्यान में रखते हुए स्थानीय भाग एवं क्षेत्रीय संसाधनों के अनुरूप होने चाहिए। ग्राम्य विकास में आवश्यक एवं उपयोगिता की दृष्टि से यातायात एवं संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य, जलापूर्ति, डाक-तार सम्बन्धी सुविधाओं के अतिरिक्त बैंक, बाजार, कृषि सम्बन्धित (खाद-बीज, यंत्र निर्माण एवं मरम्मत केन्द्र) और सुरक्षा सम्बन्धी प्रशानिक सुविधायें सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश से सम्बन्धित होते हैं।

सामाजिक-आर्थिक सुविधाओं का ग्राम्य विकास में महत्व:

ग्रामीण विकास के लिए अनेक आर्थिक एवं सामाजिक कार्यक्रम एवं योजना प्रस्तुत की गई है। हालाँकि ग्रामीण विकास का आधार मानकर आर्थिक विश्लेषकों एवं सामाजशास्त्रियों ने इस पर विशेष ध्यान दिया है। सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक तत्व के रूप में स्वास्थ्य, यातायात परिवहन, शिक्षा, जलापूर्ति, विद्युतीकरण, बैकिंग, वाणिज्य, कृषि एवं प्रशासनिक सेवाएँ आदि आर्थिक विकास को गति प्रदान करने वाले संसाधन है जो ग्रामीण विकास के एक ठोस आधार प्रस्तुत करते हैं। इन सभी सेवाओं के माध्यम से जनसंख्या एक ओर अपनी कृषि एवं कृषितर अर्थव्यवस्था को विकसित करती है।

अतः अवस्थापनात्मक तत्त्वों के अध्ययन एवं नियोजन का मुख्य उद्देश्य विकास प्रक्रिया को इस प्रकार नियंत्रित करना है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था के वातावरण का पर्याप्त विस्तार हो सके और उत्पादन कार्य-कलाप के अवसर में वृद्धि एवं गुणात्मक उन्नति द्वारा वर्तमान वातावरण का कायिक परिवर्त्तन हो सके। हमारा अध्ययन क्षेत्र दुर्गावती प्रखण्ड कैमूर जिला था जो एक

छोटा प्रखण्ड है। यहाँ भी अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। अध्ययन क्षेत्र में सुविधाओं में मन विकास से ग्रामीण जनसंख्या का जीवनस्तर में कोई खास परिवर्त्तन दृष्टिगोचर नहीं हुआ है। क्षेत्र के समुचित विकास हेतु उपलब्ध सुविधाएँ क्षेत्र के लिए पर्याप्त नहीं है।

क्रम संख्या	सुविधाएँ	ग्राम की संख्या
1	परिवार कल्याण	01
2	नर्सिंग होम	20
3	पशु चिकित्सालय	01
4	प्राथमिक उच्च चिकित्सा	02
5	मातृ शिशु कल्याण केन्द्र	02
6	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (उपकेन्द्र)	15
7	डिग्री कॉलेज	1
8	हाईस्कूल	15
9	मध्य विद्यालय	45
10	प्राथमिक स्कूल	126
11	रेलवे स्टेशन	
12	बस स्टॉप	30
13	बस स्टेशन	1
14	फोन	28
15	डाक घर	21
16	टेलीग्राफ एवं टेलीफोन	2
17	सरकारी बैंक	2
18	व्यापारिक बैंक	1
19	सहकारी बैंक	1
20	पुलिस स्टेशन	1
21	पुलिस चौकी	10
22	बाजार	5
23	बीज गोदाम	1
24	उर्वरक वितरण केन्द्र	1
25	अनुमण्डल कार्यालय	1
26	विकास केन्द्र मुख्यालय	1
27	विद्युत उपकेन्द्र	5

(1) यातायात एवं संचार सुविधा

आज के विकासशील समय में किसी क्षेत्र के लिए सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए परिवहन गम्यता का महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे देश में जहाँ आजादी के बाद यातायात प्रादेशिक अन्तप्रक्रिया का सर्वव्यापी माध्यम हो गया है। आज इसकी उपयोगिता एवं सार्थकता उपयोगिता की दृष्टि से बहुत बढ़ गयी है। हमारे अध्ययन क्षेत्र के उन्नयन के लिए यातायात एवं संचार बहुत ही महत्वपूर्ण आधारभूत एवं संचार बहुत ही महत्वपूर्ण आधारभूत कारक है क्योंकि किसी भी प्रकार के भूवैन्यासिक विकास के लिए ऊर्जा का सुव्यवस्थित सन्तुलन एवं यातायात संचालन तथा संचार के माध्यम पर निर्भर है। विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ गाँव एक दूसरे पर निर्भर हो वहाँ यातायात, संचार अति आवश्यक कारक बन जाता है। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक सामाजिक-सांस्कृतिक भूदृश्यावली में परिवर्त्तन वहाँ विद्यमान कृषि एवं व्यापार के कार्यात्मक प्रतिरूप में विकास द्वारा सम्भव है जिसमें यातायात की अपनी विशेष महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

दुर्गावती प्रखण्ड में यातायात साधन के रूप में बस एवं रेल यातायात की सुविधा उपलब्ध है। रेल यातायात की सुविधा अत्यन्त सीमित है। यहाँ गया से मुगलसराय ग्रेण्ड कार्ड है जो द॰ भाग में पूर्व से पश्चिम दिशा में लगभग 20 कि.मी. की लम्बाई में विस्तृत है। दुर्गावती प्रखण्ड में रेलवे कर्णपुरा पंचायत में प्रवेश करते हुए दुर्गावती स्टेशन पारकर खामीदौरा पंचायत में प्रवेश कर छाव, खडसरा तथा खजुरा पंचायत को लाभान्वित करते हुए आगे मुगलसराय के तरफ बढ़ जाता है। भभुआ रोड रेलवे स्टेशन से दूर-दूर एवं शहरों के लोग लाभ उठाते हैं। दुर्गावती प्रखण्ड में लगभग 75 कि॰मी॰ रेल एवं सड़क मार्ग है जिसमें लगभग 20 कि॰मी॰ रेलमार्ग तथा 55 कि॰मी॰ सड़क मार्ग है जो मानचित्र संख्या ..... से स्पष्ट है। इन मार्गो के अतिरिक्त दुर्गावती प्रखण्ड में मार्गों की और आवश्यकता है। इसके अन्तर्गत 2021 तक के लिए सड़कों का विस्तार जरूरी है।

संचार सुविधाओं का किसी भी क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। दुर्गावती प्रखण्ड में 2 सब पोस्टआफिस है। टेलीग्राफ की सुविधाएँ दुर्गावती और रामगढ़ में है। इसके अलावे कल्याणपुर, चेहरिया, मसौढ़ा, छॉव, धरहर, दुर्गावती

अवहिया आदि क्षेत्रों में विस्तृत है। ये सभी अपनी सेवाओं को सही ढंग से निर्वाह नहीं कर पाते हैं और आने वाले समय में जनसंख्या की समस्याओं के देखते हुए विस्तार करने की आवश्यकता है। वर्ष 2021 तक के लिए इन सुविधाओं का नियोजन और अधिक जरूरी है।

जनसंख्या	कुल गाँव	रेलवे स्टेशन	बस स्टेशन	डाक घर	तार घर
2500 - ऊपर	10	1	1	1	2
2000-2500	6	1	1	1	2
1500-2000	18	1	1	1	-
1000-1500	20	1	3	1	2
500-1000	30	1	1	1	1
500 से कम	24		1	4	1
	108	5	8	10	8

(2) शैक्षणिक सुविधाएँ:

जन संसाधन के गुणात्मक पहलु को सुदृढ़ एवं सबल बनाने हेतु शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अभाव में मानव जीवन का आर्थिक विकास सम्भव नहीं है। शिक्षा द्वारा ही समाज में फैली दुर्गुण एवं प्रचलित रूढ़िवादी विचारधारा को दूर किया जा सकता है।

(3) स्वास्थ्य सुविधाएँ:

ये मानव जीवन की सर्वश्रेष्ण मूलभूत आवश्यकता है। आधुनिक युग में जनसंख्या एवं दूषित खानपान के परिणाम को दूर भगाने एवं जनसंख्या को स्थिरता प्रदान करने हेतु स्वास्थ्य सुविधा जरूरी है। चिकित्सा क्षेत्र में आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान के परिणाम बड़े-बड़े बिमारियों का समय पर उपचार उपलब्ध है। स्वास्थ्य क्षेत्र में हुए व्यापक विकास के परिणामस्वरूप मानव जीवन प्रत्यासा बढ़ी है। स्वस्थ्य शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क एवं स्वस्थ मस्तिष्क द्वारा स्वस्थय समाज का निर्माण होता है। किसी भी क्षेत्र के स्वस्थ कार्यकर्त्ता ही उचित एवं उपयुक्त उत्पादन कर जीवन प्रत्याशा के आधार पर उस क्षेत्र की विकास स्तर की जानकारी प्राप्ति की जा सकती है।

हालाँकि अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं के अन्तर्गत दुर्गावती प्रखण्ड मुख्यालय पर एक प्राथमिक उपचार केन्द्र एवं प्राथमिक स्वास्थ्य उप चिकित्सा केन्द्र परिवार कल्याण

केन्द्र उपलब्ध है। परिवार एवं मातृ शिशु कल्याण केन्द्र एक है। प्रखण्ड के और विभिन्न गाँवों में परिवार एवं मातृ शिशु कल्याण उपकेन्द्र (55) है।

कृषि प्रसार एवं वाणिज्य सुविधाएँ

हमारा अध्ययन क्षेत्र मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। अतः यहाँ कृषि का विकास ही क्षेत्र का विकास की केन्द्रबिन्दु है। इसलिए कृषि प्रसाद सेवाओं का स्तर एवं स्थिति का उचित निर्धारण बहुत ही आवश्यक है। दुर्गावती प्रखण्ड में व्यवसायिक बैंक है जिसमें स्थित है- स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, भोजपुर-रोहतास ग्रामीण बैक, पंजाब नेशनल बैंक तथा सेन्ट्रल बैंक है।

ये बैंक अग्रणी कृषकों की बचत, सुरक्षा तथा विकास कार्य हेतु कई तरह की ऋण की सुविधा प्रदान करते हैं। ग्रामीण क्षेत्र के स्थानीय लोगों की दैनिक आवश्यकता से सम्बन्धित सम्पूर्ण सामग्रियाँ मुख्यतः व्यापार एवं बाजार केन्द्र दुर्गावती तथा अन्य क्षेत्रों से प्राप्त हो जाती है। उपरोक्त सभी केन्द्र अपनी सेवाओं द्वारा समीपस्थ क्षेत्रों के लिए सहायक बिन्दु है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि प्रसार सुविधाओं एवं गाँव कृषि सरकारी समितियाँ और बीज एवं उवर्रक वितरण केन्द्र 10 हैं। दुर्गावती में कृषि यंत्र पूर्ति केन्द्र है एवं कृषि से सम्बन्धित कृषियंत्र जैसे ट्रैक्टर रिपेयरिंग केन्द्र है। इसके साथ ही साधन सहकारी समितियों के द्वारा ग्राम्य जन को सस्ता गल्ला चीनी मिट्टी का तेल, उन्नत बीज आदि की आपूर्ति की जाती है।

सहकारी एवं वित्त सुविधाएँ:

दुर्गावती प्रखण्ड में उपरोक्त सुविधा हेतु सहकारिता का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहाँ साधन सहकारी समितियाँ क्रियान्वित है जिसके माध्यम से लोगों को मुख्य आवश्यक वस्तुएँ जैसी खाद्यान्न, चीनी, मिट्टी तेल, बीज तथा उर्वरक एवं कृषि से सम्बन्धित उद्योगों हेतु ऋण दिया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में अल्प एवं मध्य समय हेतु दो फसल के अवधि हेतु तथा दीर्घ कालिक ऋण एक से तीन वर्ष की अवधि के लिए संयुक्त समिति के सदस्यों को दिया जाता है जिसका भुगतान सहकारी बैंक दुर्गावती तथा चेहरिया से होता है।

क्षेत्र में कृषि एवं ग्राम्य विकास हेतु ऋण के व्यवस्था हेत वित्तीय संस्थाओं का बहुत बड़ा योगदान है। प्रखण्ड में राष्ट्रीय कृत बैंक का मुख्य उद्देश्य कृषि हेतु ऋण की सुविधा हेतु इसके अतिरिक्त लघ ुएवं कुटीर उद्योगों,

ग्रामीण हस्तशिल्पों एवं आर्थिक कार्यों तथा उद्योगों हेतु विकासशील योजनाएँ तैयार कर उनको परामर्श देना है। इस क्षेत्र में दुर्गावती, लहुरबानी, बरहुली, उडवॉ, वितीय संस्थायें शुलभ हैं। इस कार्य में सेन्ट्रल बैंक, पंजाब नेशलन बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया, ग्रामीण बैंक तथा सहकारी बैंक की शाखाएँ कार्य कर रहे हैं। उपर्युक्त ग्रामीण क्षेत्रीय बैंक का विकास नरसिंहम समिति की संस्तुति के आधार पर किया गया है जिसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य गाँवों में रहने वाले लघु एवं सीमान्त कृषक, कृषि मजदूर, कुटीर उद्योगों एवं ग्रामीण शिल्पकारी को ऋण प्रदान कर उन्हें विकसित करने के उद्देश्य से कार्य कर रहे हैं।

अन्य सामाजिक एवं आर्थिक सुविधाएँ:-

दुर्गावती प्रखण्ड में समेकित ग्राम्य विकास के लिए उपलब्ध सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक सुविधाओं का विश्लेषण एवं उनके विकास हेतु सफल नियोजन आवश्यक है। इसके साथ ही सभी गाँवों को आवश्यक आधारभूत सुविधाएँ जैसे पेयजल, विद्युतीकरण, ईंधन तथा अधिवास की आवश्यकता की पूर्त्ति हेतु भूवैन्यासिक संरचना का विश्लेषण भी अति आवश्यक है।

पेयजल आपूर्ति एवं विद्युतकरण हमारे अध्ययन क्षेत्र में ग्राम्य सर्वेक्षण एवं प्रखण्ड कार्यालय में उपलब्ध आकड़ों के अनुसार लोगों को पीने के लिए हैण्ड पम्प, कुँआ, और किसी किसी गाँव में नल द्वारा आपूर्ति होती है। प्रखण्ड के सभी गाँवों में पीने का पानी का व्यवस्था है। भारत सरकार द्वारा पीने के पानी की समुचित व्यवस्था (जल नल योजना) की गई है पर कुछ गाँव में पानी का अभाव है। वर्ष 2021 तक अध्ययन क्षेत्र के सभी गाँवों को नल जल योजना के तहत जल उपलब्ध कराना भारत सरकार का लक्ष्य है।

अध्ययन क्षेत्र में विकास एवं आर्थिक असमानता को दूर करने एवं मानव के जीवन स्तर को उच्चा उठाने की दिशा में पेयजल एवं विद्युतीकरण एक महत्वपूर्ण कदम है जिसका दूरगामी परिणाम देखने को मिलेगा। विद्युत आपूर्ति न केवल सिंचाई माध्यमों से कृषि उत्पादन क्षमता में वृद्धि में सहायक तो है ही यह छोटे छोटे उद्योगों हेतु भी आवश्यक है। गाँवों में प्रकाश की सुविधा तथा आर्थिक व्यवस्था को विकासोन्मुख बनाने हेतु विद्युत शक्ति का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। ग्रामीण

क्षेत्रों में विद्युतकरण द्वारा उद्योगों के विकास के फलस्वरूप उत्पन्न रोजगार के नये-नये अवसर, शहरों पर बढ़ते हुए दबाव को कम करने और बेरोजगारी की समस्याओं का निराकरण करने एवं विकास हेतु विद्युतकरण अनिवार्य आवश्यकता है।

क्र.सं.	पंचायत का नाम	आवासीय इकाई
1	धरहर DHARHAR	38
2	चेहरियाँ CHANARI	31
3	छांव CHHAON	26
4	खामीदौरा KHUMIDAURA	24
5	अवहिया ANWARHIYA	30
6	कर्णपुरा KARANPUARA	12
7	सावड़ SAWATH	13
8	खडसरा KHARASARA	36
9	खजुरा KHAJURA	15
10	जेवरी JEVARI	10
11	कल्याणपुर KALANPUR	12
12	डुमरी DUMARI	10
13	मसौढ़ा MASAURHA	11
कुल जोड़		

सारांश

अध्ययन क्षेत्र की औद्योगिक ग्रामीण स्वरूप पूर्णरूपण कृषि पर आधारित है। यहाँ कृषि से सम्बन्धित छोटे स्वरूप वाले उद्योग विकसित हैं। छोटे उद्योग के रूप में कृषियंत्र उद्योग, मुरब्बा उद्योग, आचार, दाल, अकौरी, पापड़, लकड़ी द्वारा फर्नीचर उद्योग, खाद्यान्न आधारित अन्य कई उद्योग- गैस, गुड उद्योग, आटा मिल उद्योग, ईट निर्माण कुटीर उद्योग, घरेलु अन्य कुटीर उद्योग, चारा कुट्टी मिल, उन्नत फ्लावर मिल, पशुधन उद्योग मत्स्य उद्योग, बिस्कुट उद्योग, चुड़ा एवं मक्का स्टार्च उद्योग आदि विकसित है।

लेकिन गाँव पंचायत एवं प्रखण्ड स्तर पर उत्सुक स्थानीय भावी उद्यमियों से चर्चा के दौरान उद्योगों के विकास के लिए अन्य और उद्योग को विकसित करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. Jain, S. C. (1967) Agricultural Development in india, Kitab Mahal, Allahabad.
2. Sankhikiya Patrika-Kanpur Dehat. 2020.
3. Singh Uttar Pradesh Disst. Gazetters, Kanpur 1986
4. Singh Ujagir (1979) Indian economic and regional geography utter Pradesh Hindi Sansthan Lucknow.
5. Tiwari K.C. and Singh, B.N. 1994 agriculture geography, prayag pustak bhavan Allahabad.
6. www.pib.gov.in
7. http://updes.up.nic.in

राजेश यादव, प्रो० केशव प्रसाद यादव